जर्मन दार्शनिक हेगेल

1770 – 1831

By
DR NISHA GUPTA
HOD & Associate Professor
Drg & Ptg Deptt
J.K.P.P.G College Muzaffarnagar

Scanned with CamScanner

जर्मन दार्शनिक - हेगेल

हेगेल और कला को यदि पर्याय कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। सौन्दर्य और कला पर किसी भी दार्शनिक ने इतना विशाल ग्रन्थ नहीं लिखा जितना हेगेल ने। बॉमगार्टन के समान ही हेगेल ने भी 'एस्थेटिक' नामक ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ में इन्होंने अपना सौन्दर्य दर्शन प्रस्तुत किया है। प्लेटो के समान ही हेगेल ने सौन्दर्य को विचार या मस्तिष्क का प्रत्यक्षीकरण माना। जिसका अनुभव हम इन्द्रीय माध्यम से करते हैं। मस्तिष्क प्रकृति से श्रेष्ठ है। इसी आधार पर इन्होंने निर्णय दिया कला जनित सौन्दर्य प्रकृति से श्रेष्ठतर है।

"प्राकृतिक सौन्दर्य मस्तिष्क के सौन्दर्य की छाया मात्र है।"

कला उस यथार्थ का दर्शन कराती है जो हमारे मस्तिष्क की उपज होती है।

- कला उच्चतर यथार्थताओं का मूर्तरूप होती है।
- खूबसूरत से खूबसूरत रूप भी बिना चेतन तत्व के सुन्दर नहीं होता।
- जड़ में चेतन तत्व के समन्वय से ही सौन्दर्य प्रकट होता है।
- प्लेटो के समान ही इन्होंने सौन्दर्य को अनन्त सत्ता का प्रत्यक्षीकरण माना है।

प्रकृति और कला हेगेल का कहना है कि प्रकृति से उच्चतर वस्तु कला है।

- कला यथार्थ से ऊपर उठकर आदर्श की ओर चलती है।
- महान कलाकृति आधार के लिए प्रकृति पर आधारित रहती है।
- कला जितनी महान होती जाती है उतनी ही जड़ चेतन से ऊपर उठती जाती है।

Scanned with CamScanner

- कला जड़ चेतन, यथार्थ और आदर्श दोनो लोको में विचरण करने लगती है।

हेगेल की दृष्टि में कला का वर्गीकरण

- प्रतीकात्मक
- शास्त्रीय
- स्वछंद

इस विचार के अनुसार ललित कलाएं पाँच है।

ललित कलाएँ

प्रतीकात्मक	शास्त्रीय	रोमान्टिक
वास्तुकला	मूर्तिकला व आंशिक रूपमें चित्रकला	चित्रकला, संगीत तथा काव्यकला

प्रतीकात्मक कला

- कला मानव मास्तिष्क के क्रमिक विकास का प्रतीक है।
- प्राचीन मिस्र में कला में विचार की केवल झलकमात्र थी।
- मिस्र के पिरामिड मे सांकेतिक रूप से विचार का प्रतीक मात्र मिलता है।
- प्राचीन यूनान की कला में जड़ चेतन दोनो तत्वों की सन्तुलित अभिव्यक्ति हुई है। मानव मास्तिष्क और प्रकृति दोनों का पूर्ण संतुलन हुआ है।

हेगेल ने इनकी स्तुति और वन्दना में यहाँ तक कह दिया है कि

"उससे अधिक सुन्दर कभी कुछ हो ही नहीं सकता"

Scanned with CamScanner

शास्त्रीय कला –

यूनानी शास्त्रीय कला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई क्योंकि वहाँ मानवाकृति में प्राण प्रतिष्ठा की गई है। इससे सुन्दर कला न हो सकती है न होगी" हेगेल

- हेगेल वास्तुकला से मूर्तिकला को अधिक विकासित मानते हैं।
- क्योंकि —
  - इसमें कम मात्रा में कम स्थूल सामग्री का प्रयोग होता है।
  - मूर्ति का निर्माण यांत्रिक नियमों के अनुसार नहीं होता है।
  - यहाँ मूर्तियाँ आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख करती है।

रोमांसवादी कला – रोमांसवादी कला आत्मा की गहराइयों में उतरकर एक आध्यात्मिक क्रिया बन जाती है। रोमान्टिक कला का उद्देश्य आत्मा के गहन अंशों की अभिव्यक्ति होती है।

- इसका मूलतत्व मनोवेग है।
- मनोवेगों का सहारा लेकर यह मनुष्य की भाव-चेतना तथा आत्मा को प्रभावित करती है।
- इस कला में विचार अधिक सशक्त होता है।

रोमांसवादी कला दो प्रकार की होती है।

1. वस्तु तांत्रिक कला –
   - वास्तु तांत्रिक कला - स्थापत्य व मूर्तिकला
   - आत्म तान्त्रिक कला – चित्रसंगीत काव्यकलाएँ

आधुनिक सौन्दर्यशास्त्री बोसांके ने हेगेल के दर्शन का समर्थन किया और सौन्दर्य को परम सत्य की ऐन्द्रीयगम्य अभिव्यक्ति माना।

Scanned with CamScanner

हेगेल का उदात्त - हेगेल की विचारधारा विशुद्ध आध्यात्मिक है। इसका चरम विकसित रूप उनके उदात्त प्रत्यय में दृष्टिगोचर होता है।

ही हेगेल के अनुसार —

- उदात्त विचार की अभिव्यक्ति का प्रत्यय है।
- उदात्त की सफल अभिव्यंजना के लिए सृष्टि में कोई भी वस्तु उचित माध्यम प्रतीत नहीं होती।
- कला में उदात्त को हेगेल स्थूल आदर्शवाद और रोमांसवादी व्यौक्तिक भाव प्रवणता से भिन्न मानते हैं।

Scanned with CamScanner